Gurukul International Multidisciplinary Research Journal (GIMRJ)*with* International Impact Factor 8.357
Peer Reviewed Journal
https://doi.org/10.69758/GIMRJ/2512S01V13P021

e-ISSN No. 2394-8426
Special Issue on Scientific Research Dec'25
Issue–XII(I), Volume–XIII

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला के काव्य में निहित प्रगतिवादी चेतना
(विशेष संदर्भ- तोड़ती पत्थर कविता)

प्रा.डॉ.मनोज सुभाष जोशी, सहयोगी प्राध्यापक,
हिन्दी विभाग प्रमुख,
श्री शिवाजी कला व वाणिज्य महाविद्यालय,अमरावती (महाराष्ट्र) 444601

निराला के काव्य में प्रगतीवादी चेतना का स्वर अत्यंत प्रबल दिखाई देता है | निराला ने अपने काव्य मी शोषकों के प्रति आक्रोश को प्रकट कर उपेक्षितों की व्यथा को पहचाना है तथा उन्हें उनका हक प्रदान करने की छटपटाहट अपने साहित्य के माध्यम से प्रस्तुत की है | उन्होंने जो भी लिखा है वह न केवल अद्‌भुत, अप्रतिम, निराला रहा बल्कि अपने आपने सर्वश्रेष्ठ रहा हैं | जैसे कि हिंदी साहित्य की छायावादी सुकुमारता की महक 'जुही की कली', सर्वश्रेष्ठ व्यंग्य कविता 'कुकुरमुत्ता', सर्वश्रेष्ठ शोक गीत सरोज स्मृति, सर्वश्रेष्ठ भक्ति की शक्ति को प्रतिपादित करती कवितायें तुलसीदास एवं 'राम की शक्ति पूजा' आदि निराला की अमर रचनाओं में निरालापन और सर्वश्रेष्ठता का अद्‌भुत समन्वय हमें दिखाई देता हैं |

इन्हीं रचनाओ की श्रृंखला में नावक के तीर के समान देखने में छोटी लेकिन गंभीर घाव करने वाली, मानवता से ओतप्रोत, महिला सक्षमीकरण की सशक्त रचना का नाम है निराला की कविता 'तोडती पत्थर' | यह कविता केवल रचना नहीं बल्कि एक सामाजिक चित्र है, जो समाज को समाज के ही बिना मुखौटेवाले चेहरे से अवगत करवाता हैं | कितनी विचित्र किंतु यथार्थ बात है कि जो कम से कम श्रम करता है, वह अधिक से अधिक धन कमाता है और जो दिन - रात खून पसिना एक कर मेहनत करता है, परिश्रम करता है, उसे दो वक्त का भोजन भी नसीब नहीं होता | समाज की ऐसी विसंगति का पर्दाफाश करती 'तोडती पत्थर' कविता मानव मन मस्तिष्क पर पड़े पुरुषप्रधान संस्कृति से रचे श्रम का उपहास करनेवाले पत्थरों को भी तोड़ने का काम करती है | इस रचना में जड मान्यताओं का विरोध सरल किंतु नाविन्यतामयी भाव - भाषा का प्रयोग, प्रगतीवादी विचारधारा, श्रमिकों की व्यथा एवं साहस का परिचय मिलता है साथ ही महिला सक्षमीकरण की उद्‌घोषणा भी गुंजित होती है | इस रचना के विभिन्न पहलुओं का अंकन हम इस प्रकार कर सकते है -

प्रगतीवादी चेतना- यह कविता प्रगतीवादी चेतना की एक महत्वपूर्ण रचना हैं | इसमें पूंजीवादी व्यवस्था के प्रति आक्रोश तथा मजदूर वर्ग की व्यथा, प्रतिकूलता होते हुए भी विपरीत परिस्थिति में साहस से किये प्रहार की गूंज ध्वनीत हुई है | व्यक्ति के व्यक्तित्व को पहचान प्रदान करने वाली इस रचना के संदर्भ में अश्विनी पाराशर का कथन है - "निराला के काव्य में प्रगति का विश्लेषण किया जाये तो देखेंगे कि कवि व्यक्तित्व के अनेक आयाम हैं, जो समय- समय पर कविता में परिलक्षित होते हैं | वह जितने निजी जीवन से जुड़े हैं, उतने ही समष्टि से भी जुड़े हैं | व्यक्ति की आशा - निराशा, उत्साह, जीजिविषा, संघर्ष, ग्लानि, वेदना, साहस के अनेक रूप परिलक्षित होते हैं | लेकिन फिर भी कवि कर्तव्य से विमुख नहीं होता | उसका लक्ष्य नहीं डिगता | वह टूटन का अनुभव तो करता है, पर झुकने को फिर भी तैयार नहीं | इसीलिये इन कविताओं में समझौते का स्वर नहीं मिलता |"...1

भाव एवं भाषा के माध्यम से सामान्य जन जीवन का चित्रण - इस रचना में निराला के संगीत, संस्कृत आदि विषयों का ज्ञान, ग्रीष्म दिवस के भीषण रूप का चित्रण करने वाले शब्दप्रयोग आदि के साथ ही सामान्य जन जीवन से अवगत करवाने वाली भाषा मिलती है |डॉ. लक्ष्मण प्रसाद सिन्हा के मतानुसार "निराला मूलत: स्वच्छंद वृत्ति के कवि हैं | उन्हें प्रसाद और महादेवी की भाँति एेकांतिक छायावादी कवि नहीं कहा जा सकता | उनका संपूर्ण काव्य उनकी सतत प्रगतिशीलता और प्रयोगशीलता का उदाहरण तो है, पर उन्हें छद्म प्रगतिवादी या प्रयोगवादी नहीं कहा जा सकता | वस्तुत: निराला की गणना उन विरल कलाकारों में की जा सकती है, जिनकी एक दृष्टि तो बाहर रहती है, किंतु दूसरी भीतर | स्वभावत: ऐसी कवि की जीवनानुभूतियों में पर्याप्त वैविध्य होता है | निराला ऐसी ही बहुरंगी जीवनानुभूतिओं के कवि है और जीवनानुभूतियों की विविधता वाले इस कवि की भाषा उतनी ही विविधवर्णी है |" ...2

निराला ने इस कविता में मुक्त छंद का सहज प्रयोग किया हैं | तोड़ती पत्थर एक ऐसी कविता है जो कि सामान्य जनजीवन को सरलतम चित्र प्रस्तुत करती है | यह वेदना ही है जो स्वयं की पीडा के अनुभव के स्तर पर जनवेदना में अंतर्मुख होकर प्रमुखता पाती है | "जिस साहित्य में वेदना भोगते मनुष्य के मन की पुकार रेखांकित होती है, वही तो सही मायने में साहित्य कहलाता हैं | निराला साधारण जनके दुःख को समझने का स्तर भी अपने दुख से तो लेकर कर पाते हैं | जिसने स्वयं कभी दुख ना जाना हो वह दूसरों का दुख क्या जायेगा ? और निराला ने स्वयं दुख ही झेले हैं | अत: जहाँ भी शोषण, अभाव, दुःख उन्हें अनुभव हुये वहीं उनकी कलम में वेदना उभर आयी |"... 3

महिला सक्षमीकरण-

निराला की तोड़ती पत्थर कविता महिला सक्षमीकरण का सशक्त दस्तावेज हैं | यह कविता इलाहाबाद की सड़क पर पत्थर तोड़ने का काम करनेवाली एक मजदूर युवती का मार्मिक एवं यथार्थ चित्र प्रस्तुत करती हैं | यह एक ऐसा रेखाचित्र है, जिसे कवि ने अपनी संवेदना से सजीव किया हैं | इसमें देखनेवाली दृष्टि कवि की है | कवि ने एक दर्शक की भूमिका निभाते हुए पत्थर तोड़नेवाली महिला के अंतर्मन की झाँकी प्रस्तुत की है | जिसमें कवि ने इलाहाबाद के पथ पर पत्थर तोड़ती हुई सामान्य मजदूर स्त्री की विशेषताओं, कार्यपटुता और गंभीरता का सजीव चित्रण किया हैं | उसके सामने पेड़ों की कतारें है बड़ी - बड़ी इमारतें है, वह गर्मियों के दिन है और दिवस अपनी पूरी तमतमाहट के साथ धूप के रूप में अपना क्रोध प्रकट कर रहा हैं | शरीर को झुलसा देनेवाली लू बह रही है | ऐसी जलती दोपहर में सारी धरती रुई के समान गर्मियों की चिंगारियों में जल रही हैं | ऐसी जलती दोपहर में भी युवती पत्थर तोड़ रही हैं | दोपहर की धूप में तपकर गर्मियों के दिनों में पत्थर तोड़ने का काम करने वाली साँवली युवती सामनेवाले भवन की ओर देखती है किंतु उसके मन में कोई द्वेष भाव नहीं-

"नहीं छायादार पेड़, वह जिसके तले बैठी हुई स्वीकार |
श्याम तन, भर बंधा यौवन,
नत नयन, प्रिय - कर्म - रत मन, गुरु हथौड़ा हाथ, करती बार - बार प्रहार |"

उसे यह बिल्कुल स्वीकार नहीं है कि वह किसी छायदार पेड के नीचे कुछ देर विश्राम करे | साँवले रंग की वह युवती अपनी नजरों को नीचे झुकाए पूरी लगन के साथ पत्थरों को तोड़ने में लीन हैं उसके हाथ में उसका गुरुरुपी हथौड़ा है, जिससे वह पत्थरों पर बार - बार प्रहार कर रही हैं |

इस कविता के माध्यम से कविने स्त्री सक्षमीकरण का सक्षम उदाहरण हमारे समक्ष प्रस्तुत किया हैं | यह युवती
केवल पत्थर ही नहीं तोड़ रही बल्कि समाज की सड़ी-गली परंपरा एवं कुप्रथाएं, पुरुषप्रधान समाज का महिलाओं के प्रति विकृत दृष्टिकोण आदि विकृत विचारधारा रुपी पत्थर को भी वह तोड़ रही हैं |

मानवतावाद- निराला के संपूर्ण साहित्य का केंद्रीय तत्व उसमें निहित मानवतावादी दृष्टिकोण रहा हैं | मानव जीवन से समस्त अन्याय, शोषण, अत्याचार, विषमता, का अंत कर मानव को विकासात्मक अवसर प्रदान होने की आशावादी पहल निराला साहित्य की पहचान कही जा सकती हैं | डॉ. सत्यदेव सिंह सत्यम के मतानुसार- "निराला की काव्य चेतना जनसाधारण के सुख - दुःख, अाशा - आकांक्षा, स्वप्न - संघर्ष से गहन रूप से संबद्ध रही हैं | उसमें दलित - उत्पीड़ित, शोषित - उपेक्षित जन के हृदय से रह - रहकर फूट पड़ने वाली राग- रागिनियां हैं, उसमें यातनाग्रस्त मानवता और चिरसंघर्षरत मनुष्यता के हर्ष - उल्लास, उत्साह - विषाद, निराशा और संत्रास से भरे स्वप्न हैं |"...4

प्रासंगिकता एवं मजदूर वर्ग की व्यथा-
मजदूर वर्ग किसी के गुलाम नहीं होते है | वे वास्तव में अपने पसीने की कमाई ही चाहते है परंतु उनके श्रम से दूसरे अनुचित लाभ उठाकर उन्हें उनका पारिश्रमिक नहीं देने के कारण मजदूर का जीवन अत्यंत व्यथा से परिपूर्ण हो जाता हैं | जिस व्यथा की कथा को मानवीय मर्म की गाथा बनाकर निराला ने प्रस्तुत किया हैं | इसका सर्वाधिक सशक्त प्रमाण 'तोड़ती पत्थर' कविता है -

"चढ़ रही थी धूप, गर्मियों के दिन, दिवा का तमतमाता रूप, उठी झुलसती हुई लू,
रुई जो जलती हुई भू,
गर्द चिनगी छा गयी,
प्राय: हुई दुपहर,
वह तोड़ती पत्थर |"

इस कविता में कवि कहते है कि, मैंने पत्थर तोड़ती मजदूर स्त्री को इलाहाबाद के पथ पर देखा है | शरीर को झुलसा देने वाली लू में वह अपने कर्म में मगन हैं |

इस कविता में एक ऐसा प्रसंग है जब उस पत्थर तोड़ने वाली युवती ने भी कवि की ओर देखा, पर वह देखना एक क्षण का ही था | जैसे किसी सितार पर कोई अपरिचित हाथ पड़ने से उसके तार छिन्न हो जाते है उसी प्रकार कवि की ओर देखने से उस युवती के कार्य में भी रुकावट उत्पन्न हुई | देखकर भी न देखनेवाली नजरों से उसने कवि की ओर देखा | उसकी दृष्टि ऐसी लग रही थी जैसे उसमें कितना ही दुःख छुपा है | परिस्थिति की मार खाकर भी वह रोई नहीं थी | कर्तव्य के तार से उसके मन की सितार सज्ज थी |जिसकी झंकार केवल कवि ने ही सुनी थी | एक क्षण कवि को देखने के बाद वह कांप गयी और फिर अपने कर्म में लीन हो गयी | पत्थर तोड़ने वाली इस युवती को भले ही कवि ने इलाहाबाद के पथ पर देखा है, परंतु यह इलाहाबाद का पथ हर उस शहर या हर उस गाव का पथ है जहाँ पर पत्थर तोड़ने वाले स्त्री-पुरुष, बाल-वृद्ध तपती दोपहर में हाथ में हथौड़ा लेकर पत्थर तोड़ने का कार्य करते हैं |

निष्कर्ष-

निराला ने इस कविता के माध्यम से व्यथा को समझनेवाले दर्शक का प्रतिनिधित्व किया हैं | यह रचना दृष्टि को दृष्टिकोण प्रदान करने का कार्य करती हैं | साथ ही मानव मन में निहित भावों का

सूक्ष्मावलोकन करने वाली दृष्टि भी प्रधान करती हैं | निराला का जीवनानुभव ही काव्य में पुनर्जीवित हो उठा है | निराला कृतित्व का उनके व्यक्तित्व के साथ अद्‌भुत समन्वय मिलता हैं | डॉ. हरिवंशराय बच्चन ने निराला के संदर्भ में कहा है - "उनके व्यक्तित्व और कृतित्व के सूत्र एक दूसरे से इतने उलझ - पुलझ गये थे कि उन्हें अलग करके देखना कठीन था | शायद साहित्य का मूल्यांकन कृतित्व पर ही आधारित होगा |यथाशक्य दोनों को जितना मैंने उन्हें जाना - समझा है, अलग करके देखता हूँ तो मुझे निराला का मानव उनके साहित्यकार से भी बड़ा मालूम होता हैं | कहने का मतलब है, निराला तब भी महान होते, जब वे एक पंक्ति भी न लिखते | तब शायद उनकी चर्चा पत्र - पत्रिकाओं, पुस्तकों में न होती, पर महानता इनकी मुहताज कब रही है ? ऐसे ही लोगों के लिए शेक्सपियर का यह कथन सत्य है कि,- 'दुनिया अपनी महान आत्माओं के विषय में नितांत अनभिज्ञ रहती हैं |व्यक्तित्व कृतित्व में प्रतिबिंबित हो, यह एक बात है, और व्यक्तित्व से कृतित्व का मूल्यांकन हो यह दूसरी बात है |किट्स का करूण जीवन दशकों तक उनके मूल्यांकन को संतुलित होने से वंचित करता रहा | दुनिया की सर्वश्रेष्ठ समालोचनाएं उन कवियों के संबंध में हैं जिनके जीवन के विषय में हम कुछ भी नहीं जानते | निराला के समालोचकों को इन दो बाहरी और भीतरी खतरों से बचना होगा |" 5

आज भी हम देखते है कि भवन निर्माण या सड़क में खुदाई करने वाले मजदूर अपने कार्य में मग्न रहते है, थोड़ी देर विश्रांति भी यदि लेते है, तो केवल श्रम परिहार हेतू ही | उनका कर्म ही उन्हें राहत और साहस प्रदान करता है | यह निराला की अत्यंत प्रासंगिक रचना है जो हर गली, हर नुक्कड़ पर सहज ही सजीव दिखाई देती हैं | परिस्थितियों की मार खाकर भी न रोनेवाली विद्रोही दृष्टि हर उस महिला की है जो सशक्त भारतीय नारी का प्रतिनिधित्व कर रही हैं |

संदर्भ ग्रंथ-

1. अश्विनी पाराशर - निराला एक अध्ययन, भारतीय ग्रंथनिकेतन प्रकाशन, नई दिल्ली पृष्ठ -115.
2. डॉ. लक्ष्मण प्रसाद सिन्हा - निराला की काव्यभाषा, जनभारती प्रकाशन, इलाहाबाद पृष्ठ - 46.
3. अश्विनी पाराशर - निराला एक अध्ययन, भारतीय ग्रंथनिकेतन प्रकाशन, नई दिल्ली पृष्ठ -11.
4. डॉ. सत्यदेव सिंह - निराला एवं मुक्तिबोध के काव्य में मानवीय संवेदना, गौतम बुक कंपनी, जयपुर, पृष्ठ - 98.
5. डॉ. हरिवंशराय बच्चन, नये पुराने झरोखे, बच्चन रचनावली खंड 6 में संकलित, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली पृष्ठ - 172.

आधार ग्रंथ - तोड़ती पत्थर - निराला, राग विराग में संकलित, संपादक डॉ.राम विलास शर्मा, लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद.